



Hargharpanditji

॥ श्री निर्जला एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री निर्जला एकादशी व्रत कथा ॥

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी सभी एकादशियों में सर्वोत्तम मानी जाती है। इस दिन बिना अन्न और बिना जल के (निर्जल) व्रत रखने का विधान है। इसे भीमसेनी एकादशी अथवा पाण्डव एकादशी भी कहा जाता है। मान्यता है कि इस एकादशी का विधिपूर्वक पालन करने से वर्ष भर की सभी चौबीस एकादशियों के व्रत के समान पुण्य प्राप्त होता है।

श्री निर्जला एकादशी व्रत कथा

एक समय महर्षि वेदव्यास ने पाण्डवों को वर्षभर आने वाली सभी एकादशियों का व्रत करने का उपदेश दिया। धर्मराज युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा माता कुन्ती सभी श्रद्धापूर्वक एकादशी का व्रत करते थे।

किन्तु भीमसेन अत्यंत बलशाली होने के साथ-साथ अधिक भोजन करने वाले थे। उन्हें तीव्र भूख लगती थी। इसलिए वे अन्य एकादशियों का उपवास नहीं कर पाते थे।

एक दिन भीमसेन ने महर्षि वेदव्यास से विनम्रतापूर्वक कहा—
"हे गुरुदेव! मैं भगवान विष्णु का भक्त हूँ, परंतु मुझसे प्रत्येक एकादशी का उपवास नहीं हो पाता। मेरी जठराग्नि अत्यंत प्रबल है। कृपया ऐसा कोई उपाय बताइए जिससे मुझे सभी एकादशियों का पुण्य प्राप्त हो जाए।"

महर्षि वेदव्यास ने कहा—

"हे भीम! यदि तुम सभी एकादशियों का फल चाहते हो, तो ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी का व्रत करो। इस दिन सूर्योदय से लेकर अगले दिन द्वादशी के पारण तक अन्न और जल दोनों का पूर्ण त्याग करो। भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा, जप, ध्यान और रात्रि-जागरण करो।

इस एक व्रत के प्रभाव से तुम्हें वर्षभर की सभी एकादशियों का पुण्य प्राप्त होगा।"

महर्षि की आज्ञा मानकर भीमसेन ने ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के दिन पूर्ण श्रद्धा और दृढ़ संकल्प के साथ निर्जला एकादशी का व्रत किया। उन्होंने पूरे दिन और पूरी रात्रि बिना अन्न और बिना जल के भगवान विष्णु का स्मरण किया।

द्वादशी के दिन स्नान, दान, ब्राह्मण-भोजन और विधिपूर्वक पारण करने के बाद उनका व्रत पूर्ण हुआ।

भगवान श्रीहरि विष्णु उनकी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए और वरदान दिया

—

"हे भीम! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक निर्जला एकादशी का व्रत करेगा, उसे सभी एकादशियों के पालन के समान पुण्य प्राप्त होगा। उसके समस्त पाप नष्ट होंगे और अंत में वह मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करेगा।"

तब से यह एकादशी भीमसेनी एकादशी के नाम से भी प्रसिद्ध हो गई।

निर्जला एकादशी का महत्व

यह सभी एकादशियों में अत्यंत पुण्यदायी मानी जाती है।

इस दिन भगवान श्रीविष्णु की पूजा, "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" मंत्र का जप तथा दान का विशेष महत्व है।

जल से भरा कलश, छाता, वस्त्र, पंखा, फल और अन्न का दान करना अत्यंत शुभ माना गया है।

यह व्रत पापों का नाश, आयु, आरोग्य, यश और मोक्ष प्रदान करने वाला माना गया है।

ध्यान दें: यदि किसी व्यक्ति की आयु अधिक हो, स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो, गर्भावस्था हो या चिकित्सकीय कारणों से निर्जल उपवास करना सुरक्षित न हो, तो उसे अपनी क्षमता और चिकित्सकीय सलाह के अनुसार व्रत करना चाहिए। भगवान की भक्ति और श्रद्धा ही सबसे महत्वपूर्ण है।

निर्जला एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु श्रद्धा, भक्ति और नियमपूर्वक निर्जला एकादशी का व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसके जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे सभी एकादशियों के व्रत के समान पुण्य प्राप्त होता है, यमदूत उसके समीप नहीं आते और अंत में वह भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री निर्जला एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"